भारत सरकार
आयुष मंत्रालय

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न सं. 895

07 फरवरी, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

आयुष के लिए विनियम

895. श्री सुखदेव भगत:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या मंत्रालय को आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी जैसी पारंपरिक चिकित्सा प्रणालियों में समान विनियमों की कमी के संबंध में आलोचना का सामना करना पड़ा है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) क्या यह सच है कि विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली संबंधी आयुष रिपोर्ट(2022) के अनुसार, मानकीकरण की कमी के कारण उपचार की गुणवत्ता और सुरक्षा में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है और साथ ही अनुमानतः 30 से 40 प्रतिशत आयुष घटिया हैं या संरक्षा नवाचार को पूरा नहीं करते हैं और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ग) क्या यह भी सच है कि 2019 की डब्ल्यूएचओ रिपोर्ट में कहा गया है कि कई आयुष उत्पाद दवाओं में वैज्ञानिक मान्यता का आभाव पाया गया और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (घ) क्या सरकार ने इन चिंताओं के दृष्टिगत, इन प्रणालियों के लिए एकसमान विनियामक संरचना विकसित करने के लिए कोई कदम उठाया है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (ङ) सरकार का विचार किस प्रकार से इन मुद्दों का समाधान करने, उत्पाद की गुणवत्ता में स्थिरता सुनिश्चित करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य की रक्षा करने का है?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)

(श्री प्रतापराव जाधव)

(क) से (ग): जी नहीं।

(घ) और (ङ): औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 एवं औषधि नियम, 1945 में आयुर्वेदिक, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी औषधियों के लिए विशेष नियामक प्रावधान हैं। विनिर्माताओं के लिए यह अनिवार्य है कि वे आयुर्वेद, सिद्ध और यूनानी औषधियों के लिए अनुसूची-न के अनुसार उत्तम विनिर्माण पद्धतियों (जीएमपी) का अनुपालन करें और औषधि नियम, 1945 में निर्धारित होम्योपैथी औषधियों के लिए अनुसूची-ड-1 का पालन करें और सुरक्षा एवं प्रभावशीलता के प्रमाण सहित विनिर्माण इकाइयों एवं दवाओं के

लिए लाइसेंस प्राप्त करने के लिए संबंधित फार्माकोपिया में उल्लिखित औषधियों के गुणवत्ता मानकों का भी पालन करें।

आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने अधीनस्थ कार्यालय के रूप में भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी भेषजसंहिता आयोग (पीसीआईएम एंड एच) की स्थापना की। आयुष मंत्रालय की ओर से पीसीआईएम एंड एच आयुर्वेद, सिद्ध, यूनानी और होम्योपैथी (एएसयू एंड एच) औषधियों के लिए फार्मूलरी विनिर्देश और भेषजसंहिता मानक निर्धारित करता है जो एएसयू एंड एच औषधियों की गुणवत्ता (पहचान, शुद्धता और शक्ति) का पता लगाने के लिए सरकारी सार-संग्रह के रूप में काम आते हैं। औषधि एवं प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940 और उसके तहत बनाए गए नियमों के अनुसार, भारत में निर्मित होने वाली एएसयू एंड एच औषधियों के उत्पादन के लिए इन गुणवत्ता मानकों का अनुपालन अनिवार्य है।

इसके अलावा, भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग (एनसीआईएसएम) आयुर्वेद, यूनानी, सिद्ध और सोवा-रिग्पा की शिक्षा और व्यवस्था को विनियमित करने के लिए एनसीआईएसएम अधिनियम, 2020 के प्रावधानों के तहत गठित सांविधिक निकाय है। इसी तरह, राष्ट्रीय होम्योपैथी आयोग (एनसीएच) होम्योपैथी के लिए एनसीएच अधिनियम, 2020 के प्रावधानों के तहत गठित सांविधिक निकाय है। दोनों आयोगों ने अपनी पद्धति संबंधी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार दवाओं की अपनी पद्धतियों से संबंधित शिक्षा और व्यवस्था से संबंधित विनियम निर्धारित किए हैं।